Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

विदेश नीति के निर्धाक तत्व

Braham Jeet*

MA in Political Science, UGC NET JRF, Proof Reader in Loksabha Secretariat, New Delhi

सार - विश्व का कोई भी देश अलग होकार अकेला अपना जीवन निर्वाह नहीं कर सकता। प्रत्येक राष्ट्र की व्यापार, वाणिज्य, ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में उसकी अपनी पहचान होती है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अन्य राष्ट्रों से आदान-प्रदान तथा मैत्री सम्बन्ध बनाये रखना नितान्त आवश्यक होता है।

----------X----------

किसी राष्ट्र की विदेश निती उन सिद्धान्तों तथा साधनों का एक समूह है जो राष्ट्र द्वारा राष्ट्रीय हित को परिभाषित करने, अपने उद्देश्यों का औचित्य सिद्ध करने तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए अपनाये जाते हैं। नार्मन हिल की दृष्टि में "विदेश नीति एक राष्ट्र के प्रयत्नों द्वारा दूसरे राष्ट्रों की तुलना में अपने हितो को बढाना है।"

"यह राज्यों की गतिविधियों का वह विकसित तथा व्यवस्थित रूप है जिसके द्वारा वे दूसरे राज्यों के व्यवहार को अपने अनुकूल बनाने का अथवा अपने व्यवहार को अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के अनुसार बदलने का प्रयास करते हैं।"

जार्ज मोडेलस्की ने

विदेश नीति की परिभाषा निम्न शब्दों में दी है:-

विदेश नीति के अन्तर्गत ऐसे सामान्य सिद्धान्तों एवं क्रियान्वयन आता है जो किसी राज्य के व्यहार को उस समय प्रभावित करते हैं ज बवह अपने महत्वपूर्ण हितों की रक्षा एवं सम्वर्द्धन के लिए अन्य राज्यों से बातचीत चलाता है।

सी. सी. रोडी

विदेश नीति कार्यो की सोची समझी दिशा है जिसमें राष्टीय हित की विचारधारा के अनुसार विदेशी सम्बनधों के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

महेन्द्र कुमार

मुख्यतः विदेश नीति का उद्देश्य होता है- देश की स्वतन्त्रता और अखण्डता की रक्षा तथा राष्ट्र के लिए एक ऐसी स्थिति प्राप्त करना जिससे कि बाहरी देश हमें सहयोग दें और हम उन्हें । विदेश नीति में अधिकाँशतः (तानाशही व्यवस्था को छोड़कर) आदर्श और यथार्थ दोनों का मेल देखने को मिलता है।

यह ध्यान रखना चाहिए कि विदेश नीति का अस्तित्व शून्यता के आधार पर हरगिज सम्भव नहीं है। यह हितों और उद्देश्यों के सन्दर्भ में ही कार्य करती है। हित उन ध्येयों को कहते हैं जो समुदाय नीति निर्माताओं को बताता है। इसकी यह परिभाषा भी हो सकती है कि वे व्यापक और सतत् साध्य जिनकी प्राप्ति के लिए कोई राष्ट्रअपने विदेश सम्बान्धो का संचालन करता हैं इसके अन्तर्गत ऐसे विषय आते है जैसे आक्रमण से सुरक्षा, रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाना तथा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्वातित्व की अवस्थायें बनाये रखना। कभी-कभी यह माना गया है कि राष्ट्रीय हित का अर्थ दूसरों को हानि पहुँचाकर भी अपने स्वार्थ की पूर्ति करना है। परन्तु मेरी समझ में राष्ट्रीय हित की उपेक्षा करके कोई भी विदेश नीति नहीं बनाई जा सकती।

विदेश नीति के प्रमुख निर्धारक तत्व

किसी राष्ट्र की विदेश नीति के निर्धारण में अनेक तत्वों का सम्मिलित योगदान होता है जिनमें किसी तत्व को अनदेखा करने से विदेश नीति के निर्धारण में दुरूह समस्या का सामना करना पड़ सकता है। राज्य का लक्ष्य, विचारधारा, आर्थिक स्थिति, राजनीतिक स्थिति, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, राष्ट्र की सामान्य संस्कृति, भावनात्मक तनाव तथा भौगोलिक स्थिति जैसे तत्व विदेश नीति की रचना में महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

www.ignited.in

विदेश नीति के निर्धारक तत्वों पर विहंगम दृष्टि डालने में निम्न तत्व प्रकाश में आते है।

1. आकार
2. भूगोल
3. आर्थिक विकास
4. संस्कृति तथा इतिहास
5. समझौते और संधियाँ
6. शक्ति ढाँचा
7. तकनीक
8. राजनीतिक उत्तरदायित्व
9. जनमत
10. सरकारी ढाँचा
11. कूटनीति
12. नेतृत्व का अनुभव और योग्यतायें
13. विचारधारा

आकार

राष्ट्र का आकार उसकी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण तत्व है। भू-राजनीतिक दृष्ट्रि से रिक्त स्थल और दुर्गम महत्वपूर्ण रहे हैं और आने वाले समय में इन्हीं से राज्यों की आवश्यकताओं की सम्भाव्य पूर्ति की आशा है।

आकार में बड़े राष्ट्र अधिकांशतः अपने बड़े क्षेत्र और जनशक्ति के आधार पर बड़ी ताकत बनने का प्रयास करते हैं और इस दिशा में उनके पास अपेक्षाकृत छोटे आकार के राज्यों से अधिक उपयुक्त अवसर होते हैं।

याद रखना होगा कि मध्यपूर्व अपने तेल भण्डारों के कारण छोटे आकार का होने के बावजूद भी विश्व राजनीति को प्ररभावित किये हुए हैं। अतः बड़ा आकार महत्वपूर्ण तो है किन्तु समय और परिस्थिति के अनुसार इसकी उपादेयता परिवर्तित होती रहती है। कल के सोवियत संघ और चीन ने अपने वर्तमान राजनीतिक स्वरूप के निर्माण में विशाल क्षेत्र का अधिकाधिक सदुपयोग कर विश्व के अन्य राष्ट्रों की तुलना में अधिक लाभ उठाया है। यूरोप के राज्य सुद्धों के परिणमस्वरूप एक से अधिक बार छोटे-बडे बने है। जर्मनी ने तो राज्य को जीवित रखने हेतु अधिकतम क्षेत्र अधिकृत करने के लक्ष्य को आवश्यक राज्यनीति तक घोषित कर दिया था। विशाल आकार वाले राज्यों को जहाँ? भू-राजनीतिक लाभ मिलते हैं वहीं उनके रक्षा सम्बन्धी दायित्व भी बढ़ते हैं जिनसे कई बार काफी जटिलतायें उत्पन्न हो जाती हैं।

भूगोल

राष्ट्र का भूगोल उसकी विदेश नीति का एक प्रमुख और शाक्तिशाली तत्व है। राज्य को समुद्री शाक्ति बनाने या उसे थलीय शाक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करने में उसके भूगोल का बड़ा योगदान होता हैं। क्षेत्रीय विशेषताएं राज्य इकाई और उसके अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर गहन प्रभाव डालती है। राज्य के अस्तित्व का लक्षण उसके धरातलीय लक्षणों पर निर्भर करता है। राज्याकार सापेक्ष स्थिति को प्रभावित करता है और प्राकृतिक संसाधन संभाव्य जनसंख्या के घनत्वय और आर्थिक ढांचे से सम्बन्धित होते हैं। ये दोनों तथ्य राज्य की आन्तरिक व बाह्र नीतियों के निर्माण में प्रभावशाली योगदान देते हैं।

आर्थिक विकास

आधुनिक विश्य की सभी शक्तियाँ आर्थिक दृढ़ता की ओर उन्मुख हैं। आज महाशक्तियों तथा महाशक्ति बनने के लिए लालायित राष्ट्रों की नीतियाँ आर्थिक तथा औद्योगिक साधनों द्वारा खाद्य, औद्योगिक तथा अन्य सामग्री का आयात, संग्रह एवं उत्पादन बढ़ाकर पहले से ही आत्मनिर्भर हेतु प्रयास किये जाते हैं।

संस्कृति तथा इतिहास

किसी राष्ट्र की विदेश नीति का निर्माण करने वाले नेता राष्ट्रीय हितों को बनाने तथा इनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया के दौरान हमेशा अपने सांस्कृतिक सम्बन्धों, ऐतिहासिक परम्पराओं तथा अनुभावों की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। पाकिस्तान की विदेश नीति उसके अतीत से प्रभावित है जबकि भारत चीन के बीच वर्ष 1993 में आपसी सहयोग का ऐतिहासिक समझौता होने के बावजूद भी भारत-चीन रिश्तों पर 1962 के इतिहास की छाया मूर्तिमान है।

www.ignited.in

समझौते और सन्धियां

समझौते और सन्धियाँ विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण साधन हैं। आज विश्व में आर्थिक सहयोग के नाम पर अनेक संगठनों का विकास हो रहा है। हथियारों की कटौति के सन्दर्भ में भी समझौतों के द्वारा राष्ट्र अपने हित और आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे हैं। हथियारों की कटौती के सन्दर्भ में भी समझौते और संधियाँ राष्ट्रों की जीवन पद्धति का अविभाज्य अगं बुन चुकी है। एशियान, ई. ई. सी. ग्रुप-15 का सम्मेलन,, ग्रुप-7 का सम्मेलन, साप्टा, नाफ्टा अणु प्रसार संधि तथा स्टार्ट समझौता इस दिशा में महत्वपूर्ण हैं।

शक्ति

शक्ति राज्य का आधार है। पाउण्ड्स के अनुसार राज्य के नीति निर्धारण का शक्ति सम्पन्न होना आवश्यक है। विदेशी नीति राष्ट्रीय हितों तथा लक्ष्यों पर आधारित होती है। ये लक्ष्य विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। कभी-कभी ये लक्ष्य प्रतियोगितामूलक होते हैं और कभी निरपेक्ष। राष्ट्र कभी शक्ति को राष्ट्रीय लक्ष्य मानकर अपनी नीति निर्धारित करते हैं और कभी शांति को।

उल्लेखनीय है कि शक्तिशाली यूरोपियन राज्य जो पहले अधिक शक्ति सम्पन्न थे अब उतने शक्तिशाली नहीं रहे क्योंकि उन्हें दो महायुद्धों का सामना करना पड़ा है। मध्यपूर्व तथा पश्चिम में शक्ति ढांचा महाशक्तियों की विदेश नीति का निवेश तत्व है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद बनी द्विधुवीय व्यवस्था ने राज्य राष्ट्र की विदेश नीति के निर्णयों को काफी हद तक प्रभावित किया है। अब तो सोवियत संघ के बिखराव के कारण विश्व एक ध्रवीय हो गया है जिसने दुनिया भर के नवोदित और विकासमान राष्ट्रों को अपनी विदेश नीति पर नये सिरे से विचार रिने को विवश किया है।

तकनीक

तकनीक विदेश नीति के निर्धारण का एक महत्वपूर्ण कारक है। दुनिया के सभी राष्ट्र विकसित और विकासमानतकनीकी क्षेत्र में अपने को प्रतिष्ठित करने में जुटे है। आज बड़ी शक्तियों के अधिक शक्तिशाली होने का करण यह है कि उनके पास उच्च तकनीकी है और इस पर उनका एकाधिकार ह। जबकि तीसरी दुनिया के देश इसी तकनीक के अभाव में अपना शोषण इन उच्च तकनीक वाले राष्ट्रों को अपने इशारे पर नचा रखा है।

राजनीतिक उतरदायित्व

विदेश नीति के निर्धारण में राजनीतिक उत्तररदायी होते हैं वह राजनैतिक व्यवस्था बन्द राजनैतिक व्यवस्था की विदेश नीति की तुलना में काफी प्रभावी होती है।

जनमत

जनमत की विदेश नीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विश्व इतिहास में हुइ क्रांतियाँ तथा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में हुए परिवर्तन के फलस्वरूप शासन क्षेत्र में चाहे वह आन्तरिक हों या बाह्र, जनता की आवाज को गम्भीरता से सुना जाने लगा है। विदेश नीति के निर्माण में सरकार जनमत की उपेक्षा किसी विशेषपरिस्थिति में तो भले कर दे किन्तु सामान्यतः जनता की आवाज का आदर किया जाता है। परमाणु निरस्त्रीकरण, उपनिवेशवाद की समाप्ति, नस्लवाद का विरोध - इन सभी के पीछे जनमत की ही शक्ति है। ब्रिटिश प्रधानमन्त्री पामस्टर्न ने भी जनमत की शक्ति को समझा। पामस्टर्न के अनुसार- "जनमत सेना से अधिक शक्तिशालि होता है। यदि जनमत सत्य और न्याय में पाया जाता है तब अन्त में वह सुगीन, गोलियों तोपों और घुड़सवारों की सेना से भी अधिक कारगर ढंग से सफलता प्राप्त कर सकता है।" दृढ़ जनमत के आगे शक्तिशली राज्यों को भी झुकना पड़ा है। 1968 में सुयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति जानसन को विश्य जनमत के आगे झुककर उतर वियतनाम पर बमबारी रोकने के लिए बाध्य होना पड़ा था।

सरकार का ढांचा

यह विदेश नीति के निर्धारण का एक प्रमुख तत्व है। लोकतुत्रात्मक शासन-व्यवस्था,, केन्द्रित प्राधिकरण प्रणाली तथा निर्देशों को समाहित करती है। इस प्रकार विदेश नीति में अपनी जनता, सरकार तथा फौजी तानाशाहों के विचारों तथा निर्देशों को समाहित करती है। इस प्रकार विदेश नीति का आकार निर्धारित करने में सरकारी ढांचा एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

यहाँ यह भी ध्यान रखना होगा कि सरकारी ढांचे के अतिरिक्त सामाजिक ढ़ाँचा भी विदेश नीति उतनी ही कमजोर होगी तबकि प्रबुद्ध तथा अनुशासित नागरिकों वाले देश की विदेश नीति अधिक दृढ़ होगी।

www.ignited.in

कूटनीति

कूटनीति के सन्दर्भ में आर्गेनस्की ने लिखा है-"कुशलता और कंपट एक अच्छी कूटनीति के लक्ष्ण भले ही हो सकते हैं किन्तु इनको कूटनीति को परिभाषित करने वाली विशेषता नहीं कहा जा सकता। इसे विदेश नीति के समकक्ष भी नहीं कहा जा सकता। कूटनीति तो विदेश नीति के समकक्ष भी नहीं कहा जा सकता। कूटनीति तो विदेश नीति का एक अगं हैं जो विदेश नीति संचालन में प्रयुक्त होता है।" क्विन्सी राइट के अनुसार- लोकप्रिय रूप में कूटनीति का अर्थ है सौदे में या लेन-देन में चातुर्य, धोखेबाजी और कुशलता का प्रयोग। अपने विशेष अर्थ में जिसमें कि वह अन्तर्राष्टीय सम्बन्धों में प्रयुक्त ही जाती है, यह सौदेबाजी की वह कला है जो राजनीति की उस व्यवस्था में कम मूल्य से अधिक से अधिक सामूहिक लक्ष्यांको प्राप्त करती है जो राजनीति की उस व्यवस्था में कम मूल्य से अधिक से अधिक सामूहिक लक्ष्यो को प्राप्त करती है जिसमें कि युद्ध एक सम्भावना है। वास्तव में सबसे अच्छी कुटनीति वह मानी जाति है जिसमें एक राष्ट्र अपने विरोधी का गला बिना चाकू का प्रयोग किये ही काट लेता है।

विदेश नीतियाँ केवल कल्पनायें नहीं है बल्कि यें राष्ट्रीय कितों की व्यावहारिक धारणाओं का परिणाम है। अतः कूटनीति द्वारा चित्रित विश्व दृश्य तथा कूटनीतिज्ञों द्वारा तैयार की गयी रिपोर्ट विदेश नीति के निर्माण में महत्वपूर्ण उपकरण है। कूटनीति का कार्य ढंग तथा कूटनीति का स्वरूप यह सभी मिलकर विदेश नीति के संचालन को प्रभावित करते हैं।

नेतृत्व का अनुभव और योग्यतायें

किसी राष्ट्र के नेतृत्व के विभिन्न आयाम, प्रतिमान, अनुभवों और विश्व के प्रति इनका दृष्टिकोण यह सभी विदेश नीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महात्मा गाँधी और नेहरू के विचारों से प्रभावित होकर शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व को विदेश नीति में परमाणु बम एक आवश्यक तत्व के रूप में रखा गया। यद्यपि यह विदेश नीति में परमाणु बम एक स्वतन्त्र निर्धारक तत्व नहीं है फिर भी इसका योगदान महत्वपूर्ण है।

विचारधारायें

विचारधारायें नीति निर्धारकोके समक्ष भावी समाज की कल्पना अथवा आदर्श प्रस्तुत करती हैं। अतः किसी भी राष्ट्र के भावी एवं दीर्घकालीन उद्देश्य एवं उसी के अनुरूप विदेश नीति को दिशा देने में विचारधारा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। विचारधारा के ही आधार पर विश्व अनेक खेमों में विभाजित है। विश्व में शीत युद्ध के उदय और विकास का कारण वैचारिक मतभेद ही रही है। वैचारिक संकल्पना अनेक राष्ट्रो की विदेश नीति में समीपता का एक प्रमुख साधन है। पैडलफोर्ड और लिंकन के मतानुसार विचारधारा आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक मूल्यों व लक्ष्योंसे सम्बन्धित विचारों का निकाय है जो इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्यो की योजना तैयार करती हैं विचारधारा विदेश नीति की नैतिक, कानूनी व जैवकीय पदों में व्याख्या तो प्रस्तुत करती ही है, इसका औचित्य भी सिद्ध करती है।

सन्दर्भ

1. George modelski: A Theory of Foreign policy, p. 3
2. c.c.Rodee: introduction of Political science, p. 571
3. M.Kumar: Theoretical aspects of International Politics, P 293.
4. अशोक कुमार सिंह: आधुनिक राज्य का रक्षा तन्त्र, पृ॰ 8
5. एस.आर. महरोत्रा, इण्डियन फॉरेन पालिसिज - दि नेहरू एस, 1975, पृ0 40-41
6. जे.एन दीक्षित भारत की विदेश नीति तथा इनके पड़ोसी, 2005
7. राजबाला सिंह, भारत की विदेशनीति, 2005, पृ. 66
8. संजय कुमार और मनुराग जायसवाल, युद्ध एवं शांन्ति की अवधारणा, 2007
9. ब्रजेन्द्र प्रताप गौतम, भारत की विदेश नीति, 2002, पृ. 74

Corresponding Author

Braham Jeet*

MA in Political Science, UGC NET JRF, Proof Reader in Loksabha Secretariat, New Delhi

braham777@gmail.com

www.ignited.in